अध्याय -02

वन एवं वन्य जीव संसाधन

स्मरणीय तथ्य

1. विस्तृत क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से विकसित वनस्पतियों के समूह को वन कहते हैं।
2. जीवों के पारस्परिक तथा वातावरण के साथ उनके संबंधों के वैज्ञानिक अध्ययन को पारिस्थितिकी कहते हैं।
3. पारिस्थितिकी शब्दावली का सर्वप्रथम प्रयोग अर्नेस्ट हैकल ने किया।
4. जैव एवं अजैविक घटकों के बीच होने वाली अंतर क्रियाएं पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करती है। पारिस्थितिक तंत्र का जनक ए. जी. टांसले को माना जाता है।

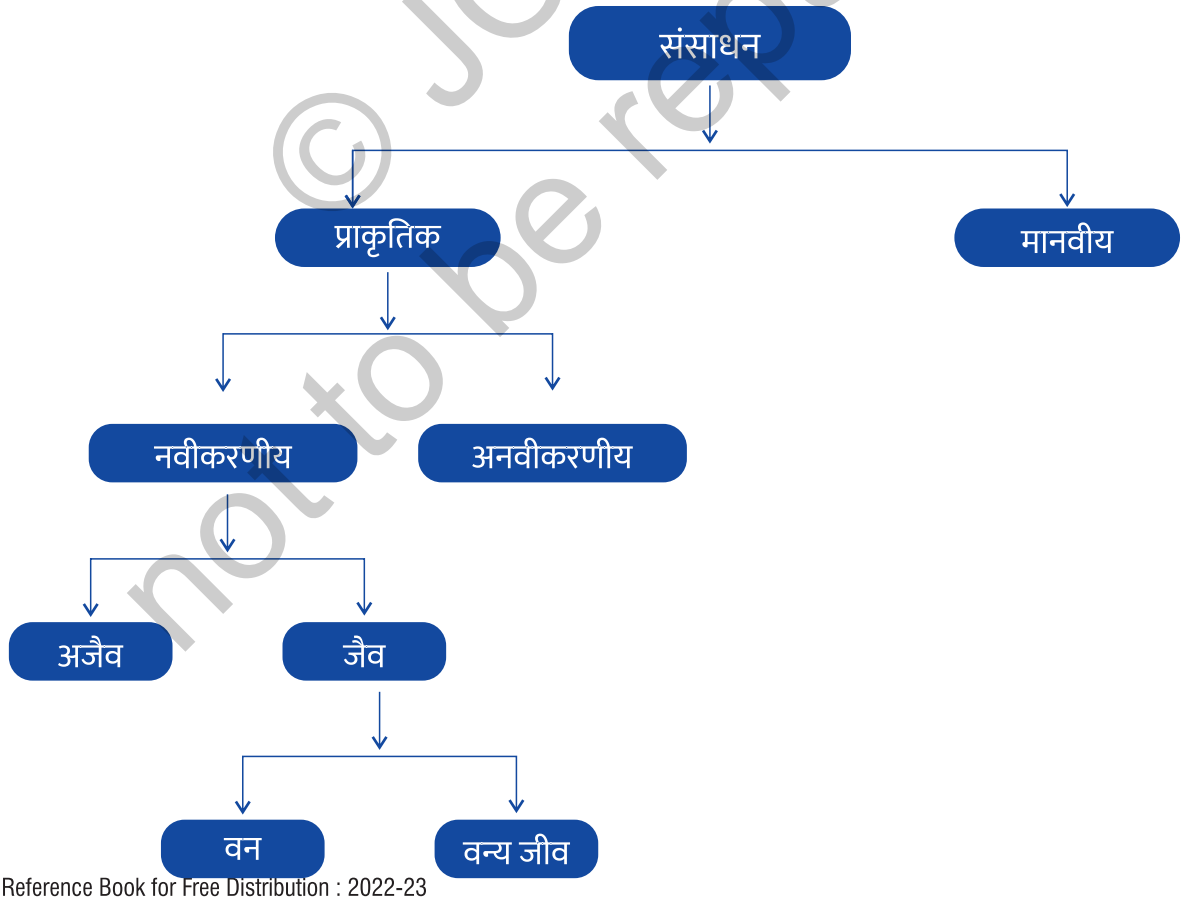

© JCERT not to be republished

वन का भौगोलिक वर्गीकरण

- उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन
- उष्णकटिबंधीय पतझड़ वन
- उष्णकटिबंधीय घास के मैदान
- शुष्क मरुस्थलीय वन
- डेल्टाई वन
- पर्वतीय वन

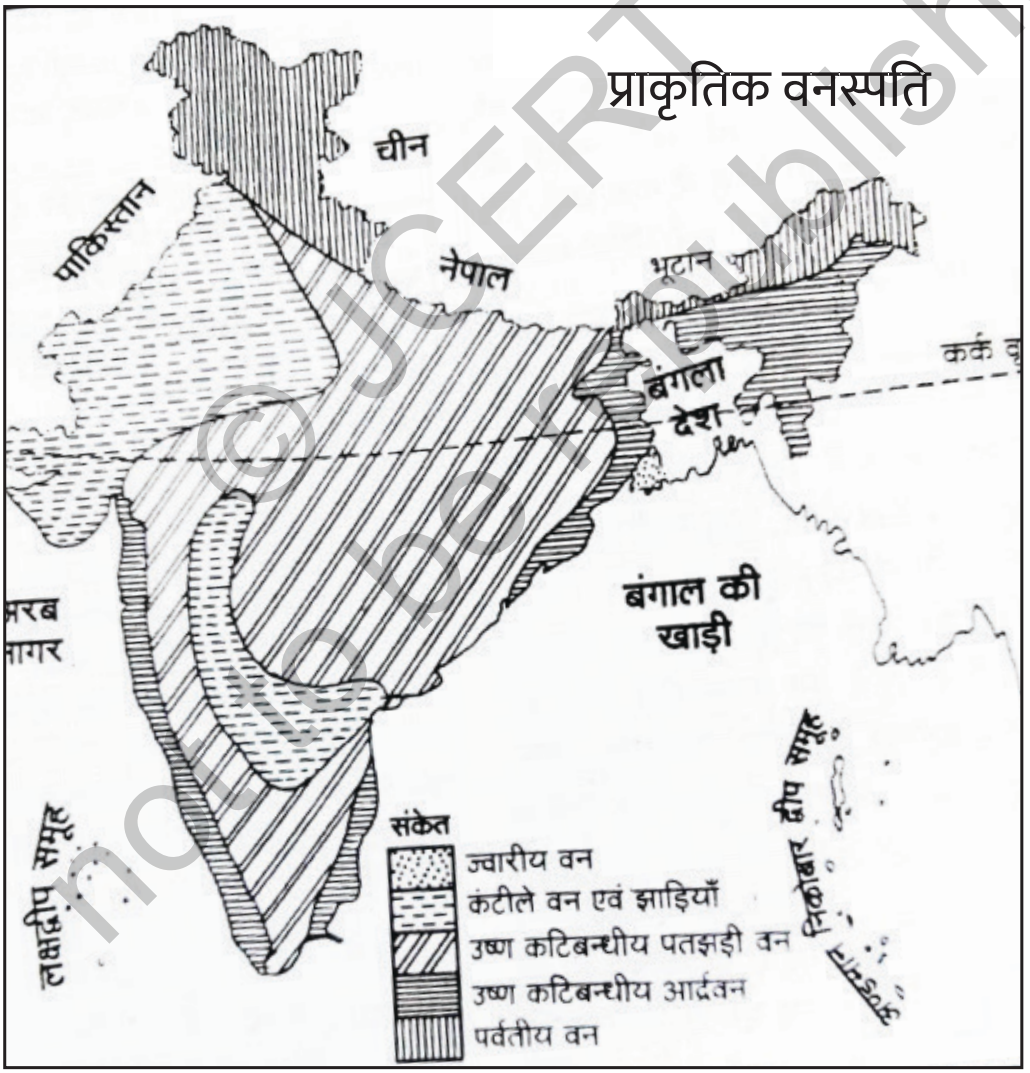

© JCERT not to be republished

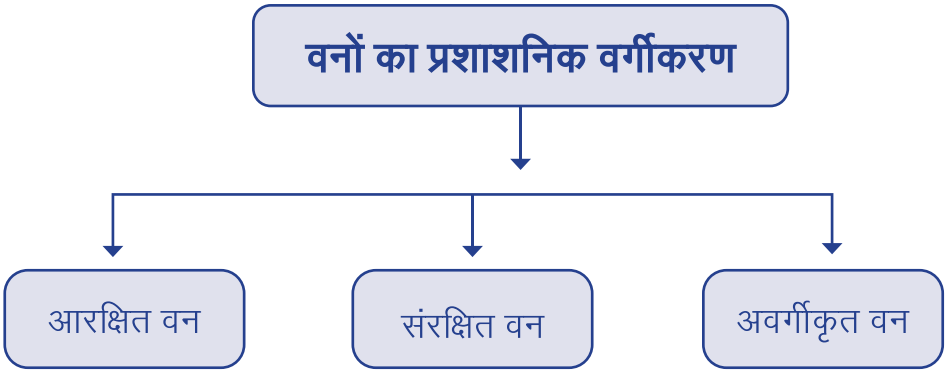

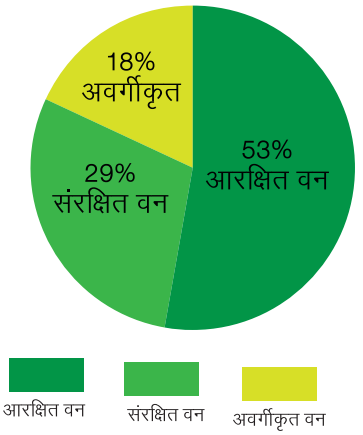

अंतरराष्ट्रीय प्राकृतिक संरक्षण और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण संघ (IUCN)

वन के विविध पादपों एवं प्राणियों को उसकी स्थिति के आधार पर अंतरराष्ट्रीय प्राकृतिक संरक्षण और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण संघ (IUCN) के अनुसार निम्न श्रेणियों में विभाजित किया जाता है।

1. सामान्य जाति, इनकी संख्या पर्याप्त होती है।
2. संकटग्रस्त जाति, इनका विलुप्त होने का खतरा है।
3. सुभेदय जातियां, ऐसी जातियां जिनके विलुप्त होने की खतरा हो।
4. दुर्लभ जाति, संख्या बहुत कम परिस्थितियां नहीं परिवर्तित होने पर यह संकटग्रस्त श्रेणी में आ सकता है।
5. स्थानिक जाति, विशिष्ट प्राकृतिक परिस्थिति वाले जीव।
6. लुप्त जाति, ऐसे जीव जो पृथ्वी पर अनुउपलब्ध हो उदाहरण, एशियाई चीता, गुलाबी सिर वाली बत्तख।

© JCERT not to be republished

वनस्पतिजात : विशिष्ट पर्यावरण में पाई जाने वाली पादप स्पीशीज के समूह को वनस्पति जात कहते हैं।

प्राणीजात: विशेष पर्यावास में मिलने वाले प्राणी समूह को प्राणी जात कहते हैं।

वनस्पति जात एवं प्राणीजात में हास्यमान प्रवृत्ति और कारण

- विश्व की 8% उपजाति भारत में मिलती है
- भारत में 10% वनस्पतिजात एवं 20% स्तनधारी को लुप्त होने का खतरा है

कृषि क्षेत्र में विस्तार

- भारतीय वन सर्वेक्षण के अनुसार 1951 से 1980 के बीच 262000 वर्ग किमी वन भूमि को कृषि भूमि में बदल दिया गया
- पर्वतीय एवं पठारी क्षेत्रों में स्थानांतरित कृषि के कारण वनों में कमी

विकास परियोजना

- उद्योग एवं अन्य परियोजनाओं के कारण वनों का भारी विनाश हुआ
- नदी घाटी परियोजना जो मुख्यता वनीय क्षेत्र में होते हैं इससे वनों की भारी हानि हुई

वन संवर्धन एवं वृक्षारोपण

- उपयोगिता एवं आवश्यकता के अनुरूप वृक्षारोपण वन संवर्धन कहलाता है
- वनीकरण हेतु भारत के कई भागों में संवर्धन वृक्षारोपण किया गया
- प्रभावी प्रजाति संवर्धन के कारण कई प्रजातियां विलुप्त हो जाती है

खनन

- वनों से आच्छादित पठारी क्षेत्र में खनन के कारण वन एवं जैविविधता का भारी विनाश हुआ

संसाधनों का असमान बटवारा

- संसाधनों की कमी से समाज पर प्रतिकूल असर
- महिलाओं को घरेलू वस्तु की पूर्ति के लिए अतिरिक्त श्रम करना पड़ता है जैसे जल, इंधन, चारा
- वनों के कमी के कारण बाढ़ सूखा जैसी आपदा की बारंबारता में वृद्धि होती है, पीड़ित—गरीब
- वनों पर निर्भर समुदाय में सांस्कृतिक क्षय की समस्या
- वन क्षय क्षेत्र से उत्प्रवास की समस्या

© JCERT not to be republished

भारत में वन और वन्य जीव संरक्षण के लिए किए गए कार्य

सरकारी स्तर पर

- **कानून बनाकर**
  - a.वन्यजीव अधिनियम 1972, b.वन अधिनियम 1980 c.पर्यावरण अधिनियम 1986 d. रामसर अभि समय 1971 e.जैव विविधता अधिनियम 2002
- **प्रजाति आधारित परियोजना**
  - 1. परियोजना 1973 2. एक सींग वाला गैंडा 3. हंगुल 4. एशियाई शेर 5. गंगा डॉल्फिन
- **जैव विविधता संरक्षण**
  - यथा स्थल संरक्षण in-situ
    - संरक्षित क्षेत्र
      - राष्ट्रीय पार्क
      - वन्य जीव अभ्यारनय
      - जैवमंडल
        - स्थलीय
        - सागरीय
  - यथा स्थल संरक्षण in-situ
    - बीज बैंक, जीन बैंक, क्रायोप्रिजर्वेशन
    - वनस्पति उद्यान ,प्राणी उद्यान, aquarium,वनस्पति वाटिका
    - गृह उद्यान, पवित्र पौधे

सामुदायिक स्तर पर

- **चिपको आंदोलन**
- **समुदाय द्वारा संरक्षित सेंचुरी, जैसे भैरव देव डाकव**
- **सामुदायिक वनीकरण एवं संरक्षण**
- **संयुक्त वन प्रबंधन**

भारत की विलुप्त हो रहे जीव–जन्तुओं की संख्या

पजातियाँ	विलुप्त हो चुकी	विलुप्त होने का खतरा
• पेड़-पौधे	384	19,079
• मछलियाँ	23	343
उभयचर	2	50
• सरीसृप	21	170
• बिना रीढ़ वाले जन्तु	98	1,355
• पक्षी	113	1,037
• स्तनधारी	83	497
कुल	744	22,531

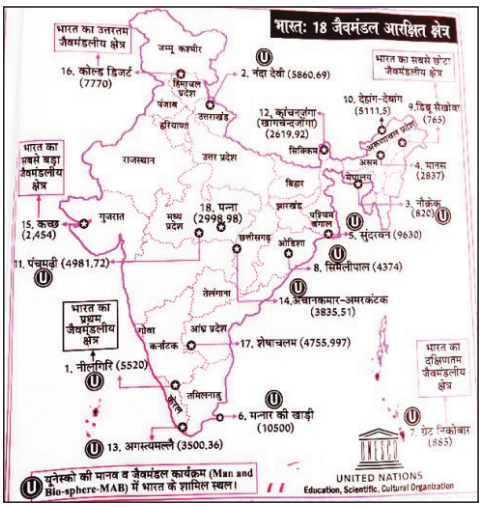

© JCERT not to be republished

अभ्यास

प्रश्नावली

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. इनमें कौन सी टिप्पणी प्राकृतिक वनस्पति जात और प्राणी जात के ह्रास्य का सही कारण नहीं है

A. कृषि प्रसार

B व्वृहत स्तरीय विकास परियोजनाएं

C. पशु चारण और इंधन लकड़ी एकत्र करना

D. तीव्र औद्योगिकीकरण और शहरीकरण

उत्तर - C

2. इनमें से कौनसा संरक्षण तरीका समुदायों की सीधी भागीदारी नहीं करता?

A. संयुक्त वन प्रबंधन

B. चिपको आंदोलन

C. बीज बचाओ आंदोलन

D. वन्य जीव पशु बिहार का परिसीमन

उत्तर - D

3. बेतला राष्ट्रीय उद्यान किस परियोजना के अंतर्गत है ?

A. बाघ परियोजनाB. हाथी परियोजनाC. पक्षी परियोजनाD. मगरमच्छ परियोजना

उत्तर- A

4. हिमालयन यव पौधे से किस रोग का उपचार किया जाता है

A. हृदय रोगB. यक्ष्मा C. मलेरियाD. कैंसर

उत्तर - D

5. बाघ परियोजना कब शुरू हुआ

A.1983 B.1973

C.1976 D.1980

उत्तर - B

6. भारत में सर्वाधिक वन आवरण क्षेत्र वाला राज्य कौन सा है?

A. मध्य प्रदेश B. अरुणाचल प्रदेश

C. महाराष्ट्र D. झारखंड

उत्तर - A

© JCERT not to be republished

7. झारखंड के कितने प्रतिशत क्षेत्र पर वन का विस्तार है?

A.42 B50

C.29.62 D35.49

उत्तर - C

8. हाथी संरक्षण परियोजना कब शुरू हुई?

A.1982 B.1992

C.2002 D.1996

उत्तर - B

9. डालमा अभ्यारण किस राज्य में अवस्थित है?

A. झारखंड B मध्य प्रदेश

C. छत्तीसगढ़ D. बिहार

उत्तर-A

10. वन नीति के अनुसार देश के कितने प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र पर वनों का विस्तार होनी चाहिए

A.50 B60 C.33 D46

उत्तर-C

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 32 शब्दों में दीजिए।

1. जैव विविधता क्या है? या मानव जीवन के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर-वातावरण में प्राणीजात एवं वनस्पतिजात समूह द्वारा निर्मित विभिन्नता को जैव विविधता कहते है।

जैव विविधता मानव के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है कि:

- मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है
- उत्पाद का पुनः सृजन
- अनुकूल पारिस्थितिकी वातावरण

2. विस्तार पूर्वक बताएं कि मानव क्रियाएं किस प्रकार प्राकृतिक वनस्पति जात और प्राणी जात के हाथ के कारण हैं?

उत्तर-मानव अपने निम्न क्रियाओं से वन एवं वन्य जीवन को क्षति पहुंचा रही है:

- वनों का विनाश करके।
- वन्यजीवों के प्रकृति वास खत्म करके।
- वन्यजीवों का अवैध शिकार करके।
- खनन, बहुउद्देशीय परियोजना एवं बड़े औद्योगिक इकाई स्थापित करके।

© JCERT not to be republished

- स्थानांतरित कृषि एवं कृषि भूमि प्रसार के लिए वनों की कटाई।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 120 शब्दों में दीजिए।

1. भारत में विभिन्न समुदायों ने किस प्रकार वन एवं वन्य जीव संरक्षण में योगदान किया है? विस्तारपूर्वक विवेचना कीजिए।

उत्तर-भारत में प्राचीन काल से ही वन एवं वन्यजीवों के महत्व को समझा गया था लेकिन आधुनिक विकास ने इनकी इतनी निर्मम दोहन किया कि आज ईद पर संकट के बादल मंडराने लगे अतः भारत के प्रकृति प्रेमी समुदायों ने इसकी संरक्षण की पीड़ा उठाई और विभिन्न प्रयास किए:

- भारत के कुछ क्षेत्रों में स्थानीय समुदाय सरकारी अधिकारियों से मिलकर अपने आवास स्थलों के संरक्षण में जुटे हुए हैं।
- सरिस्का बाघ रिजर्व क्षेत्र में स्थानीय समुदाय वहां के वन्य जीव संरक्षण के लिए खनन कार्य बंद करवाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।
- अलवर में ग्रामीणों ने 1200 हेक्टेयर भूमि को सैंक्चुअरी घोषित कर दिया।
- उत्तराखंड में चिपको आंदोलन एक सामाजिक आंदोलन बन गया इस प्रयास से वहां सामुदायिक वनीकरण एवं जैव विविधता संरक्षण को प्रोत्साहन मिला।
- जनजातियों एवं हिंदू समुदायों में वृक्षों की पूजा की जाती है अतः ऐसे वृक्ष का संरक्षण समाज के द्वारा प्राप्त होता है।
- उड़ीसा में हरित वनों के विकास के लिए संयुक्त वन प्रबंधन नीति को अपनाया।

© JCERT not to be republished